

वर्ष:3 अंक:1 जनवरी 2019

जे-7, श्रीरामनगर, रायपुर (छ.ग.)

आर.एन.आई. पंजीकरण क्रमांक CHHHIN/2017/72506



# किलोल



संपादक - डा. आलोक शुक्ला

सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -

राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, शेख अजहरुद्दीन



प्यारे बच्चों,

आप सबको नया साल मुबारक हो. आइए नये साल में संकल्प लें कि और अधिक मेहनत करेंगे. स्वयं भी आगे बढ़ेंगे और देश को भी आगे बढ़ाएंगे. आप सबकी शुभकामनाओं से किलोल अपने प्रकाशन के तीसरे वर्ष में प्रवेश कर रही है. मुझे आशा है कि पत्रिका आपको पसंद आ रही होगी और इसमें आपको मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्धक सामग्री भी पढ़ने को मिल रही होगी.

मेरा सभी शिक्षकों और शिक्षा मिभाग के अधिकारियों से भी अनुरोध है कि इस पत्रिका का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिये प्रत्येक स्कूल में बच्चों को इसे छापकर देने के बारे में विचार करें. पत्रिका की पी.डी.एफ. को डाउनलोड करके स्थानीय स्तर पर छपवाया जा सकता है और इसे बच्चों में निःशुल्क वितरित किया जा सकता है. इसके लिये समुदाय से कुछ चंदा भी लिया जा सकता है और सर्व शिक्षा अभियान में शाला विकास की राशि का उपयोग करने पर भी विचार किया जा सकता है. किलोल के लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. हमेशा की तरह किलोल <http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol> पर निःशुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है.

आलोक शुक्ला

## करम के फर

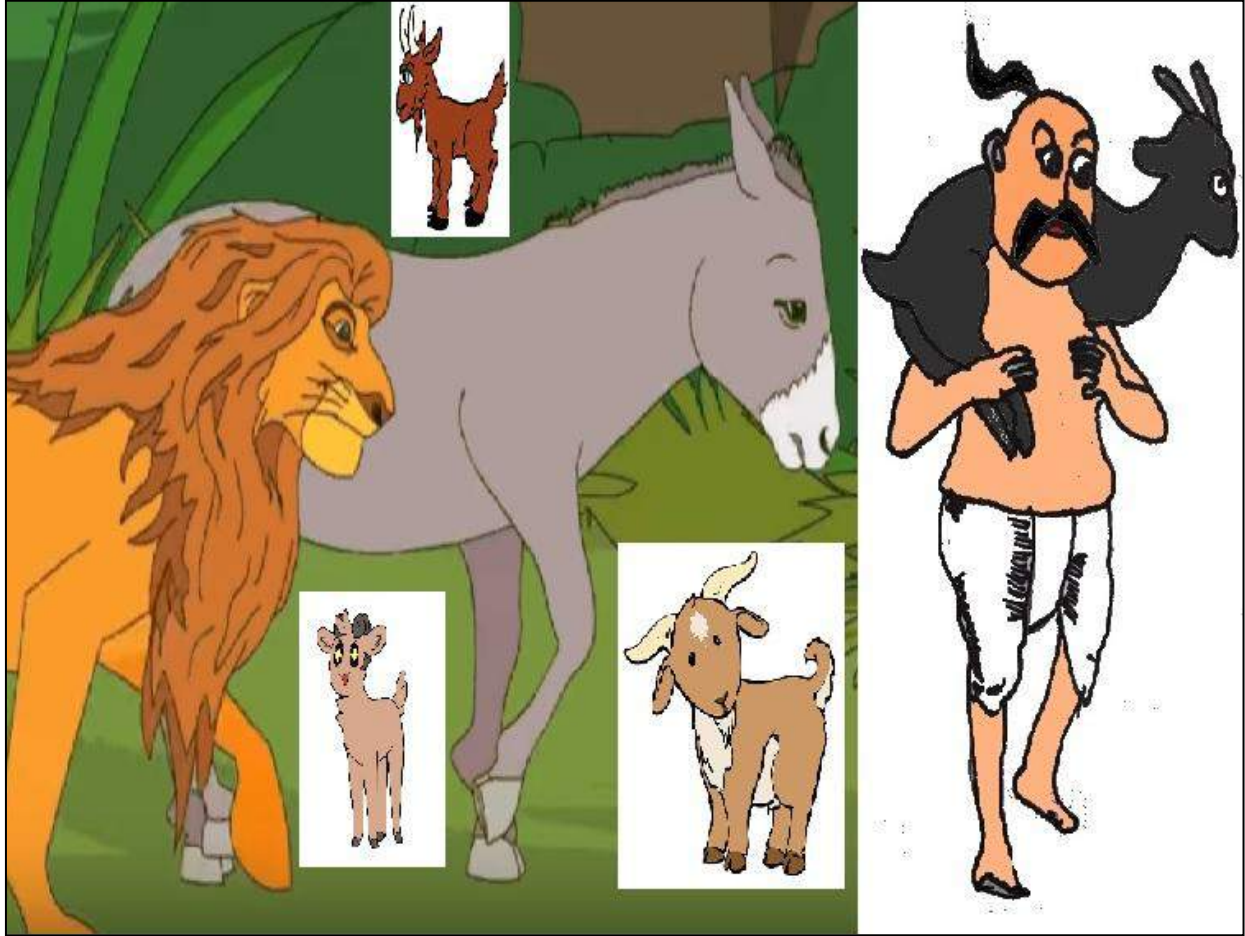
लेखक - टुकेश कुमार मंडावी



एक गांव म सुखराम अउ ओखर घरवाली सुखिया रहाय. सुखराम अइबड़ गरीब रहाय. एक दिन सुखिया ह सुखराम ल जंगल ले लकड़ी लाने बर भेजिस. सुखराम जंगल ले सुखा लकड़ी काँट के घर आत रहिस अचानक रद्दा के एक ठन पथरा ले हपट के गिर गे. बोकर गोड़ ले खून निकले ल लगिस. पीरा भरावत खे हा सोंचिस कि ये रद्दा म कतको झिन मन रेंगथे ओमन मोर जइसे हपट के झिन गिरे इही ल सोंच के ओहा पथरा ल निकाले के परियास करथे. पथरा ल हटाइस त ओला अइबड़ अकन सोन के सिक्का मिलिस. सोन के सिक्का ल अपन गमछा म बांध के घर लेग के अपन घरवाली ल देखाइस. ओकर घरवाली कहिस ये तोर सुध्दर काम के फल हरे. सोन ल बेच के सुख से रहे ल लगिस.

## परिवार का सदस्य

लेखक - राजेश मेहरा



मन्नू अपनी दादी के साथ हिमाचल प्रदेश के कुल्लू गांव में रहता था. उसका गांव पहाड़ के छोटे ढलान पर बसा था. उसके गांव के चारों तरफ प्राकृतिक छटाओं की कमी नहीं थी. कमी थी तो सिर्फ मूल सुविधाओं की. बूढ़ी दादी अब बुजुर्ग होने के कारण ज्यादा चल नहीं पाती थी. घर ढलान पर होने के कारण बार बार दादी को लकड़ी आदि लाने के लिए नीचे उतरने पड़ता था. दादी किसी तरह उतर तो जाती लेकिन फिर घर पर आने के लिए उसे चढ़ने में बहुत दिक्कत होती थी. मन्नू ने गांव की पंचायत से कह कर घर में दादी के लिए शौचालय तो बनवा दिया था



लेकिन वह अपनी दादी की अन्य कामों में मदद नहीं कर पाता था. अपना जीवन यापन करने के लिए उनके पास बकरियां थी जिन्हें चराने के लिए उसे भी ऊपर जंगलो में रोज सुबह ही जाना पड़ता था. बकरियां चराकर वह देर शाम ही लौट पता था. मन्नू अपनी दादी के लिए बहुत चिंतित रहता था. मन्नू और दादी का जीवन किसी तरह से कट रहा था. अब उनको एक ओर मुसीबत ने घेर लिया था. पिछली रात को आदमखोर बाघ ने उनकी बाहर बंधी एक बकरी का शिकार कर लिया. एक तो गरीबी ऊपर से ये मुसीबत. अब तो मन्नू भी टूट रहा था लेकिन उसकी दादी उसे ढांडस बंधाती और कहती कि सब ठीक हो जाएगा भगवान पर भरोसा रखो.

अब मन्नू रात को बाहर बंधी बकरियों की रखवाली करता और सुबह बकरियां चराने जाता. नींद पूरी ना होने के कारण वह कमजोर भी होने लगा. एक दिन सुबह से ही थोड़ी बूदाबांदी हो रही थी. मन्नू अपनी बकरियों को लेकर ऊपर पहाड़ पर जंगल की तरफ चराने जा रहा था तभी उसे किसी की करहाने की आवाज आई. एक बार तो उसने सोचा कि कहीं वही आदमखोर बाघ तो किसी जानवर को नहीं मार रहा लेकिन फिर करहाने की आवाज आई तो वह उसी दिशा में चला. पहुंचने पर उसने देखा कि एक जंगली गधा कुछ झाड़ियों के पास घायल पड़ा है. मन्नू ने अपनी बकरियों को चरने छोड़ दिया और गधे के पास पहुंचा. लगता था कि बाघ ने उसे घायल किया था लेकिन वह किसी तरह बच गया था. मन्नू को जंगल की कुछ जड़ी बूटियों का ज्ञान था जिसे उसकी दादी ने सिखाया था. मन्नू ने तुरन्त कुछ जड़ी बूटियां इक्कठी की और पास में बहते झरने से पानी लाकर गधे के घावों को धोया. उसने जड़ी बूटियों को पीसा और अपने गमछे की मदद से गधे के घावों पर बांध दिया. गधे ने अब करहाना बन्द कर दिया था. मन्नू ने उसके लिए खाने

और पानी का भी इंतजाम किया. शाम होते होते गधा खड़ा हो गया. लेकिन वह कमजोर लग रहा था. मन्नू ने सोचा यदि इसे यहां छोड़ा तो बाघ इसे खा जायेगा. मन्नू ने अपनी बकरियों को भी इक्कठा किया और गधे को भी हांक कर किसी तरह अपने घर ले आया.

दादी को उसने सारी बात बता दी. दादी उसकी बात से खुश थी कि उसने घायल गधे की मदद की. रात को दादी ने गधे के लिए अच्छी जड़ी बूटियों और खाने का इंतजाम किया ताकि वह जल्दी ठीक हो जाये. गधा भी मन्नू और दादी की सेवा से खुश था. रात को खाना खाने के बाद मन्नू बाहर बकरियों की रखवाली के लिए बैठा रहा. गधे को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा कि मन्नू रात को भी जाग रहा था. गधे को यह बात समझ आ गई थी कि मन्नू बकरियों की देखभाल के लिए ही जाग रहा है. मन्नू बीच बीच में थोड़ा सोता लेकिन कुछ आवाज सुनते ही वह जाग जाता. सुबह फिर मन्नू अपनी बकरियों का दूध निकाल कर उन्हें जंगल में चराने चल दिया. जाते हुए उसने गधे को कहा कि तुम यहीं रहो और जल्दी ठीक हो जाओ.

दिन में गधे ने देखा कि दादी भी बड़ी मुश्किल से नीचे से कोई सामान लेकर ऊपर चढ़ पाती है. गधे को मन्नू और दादी पर तरस आया. उसने उन दोनों की मदद करने की ठानी. कुछ दिनों में गधा मन्नू और दादी की सेवा से स्वस्थ हो गया. मन्नू ने उसका नाम भोला रख दिया था. मन्नू ने एक दिन उसे वहां से जंगल में चले जाने को कहा लेकिन उसने अपनी आँखों में आंसू लाकर और गर्दन हिलाकर मना कर दिया. मन्नू उसे जाने के लिए बार बार कह रहा था लेकिन वह अपनी

गर्दन हिला देता. ये देख दादी मुस्कराई ओर बोली - 'मन्नू वो नहीं जाना चाहता अब वह यहीं रहेगा.' इतना सुन भोला खुश हुआ.

अब दादी जैसे ही नीचे जाने लगती तो भोला उनके सामने बैठ जाता था और दादी उस पर बैठ जाती. इस प्रकार अब भोला दादी को नीचे जाने और ऊपर लाने में मदद करता और कोई भारी सामान भी होता तो वह उसे अपनी पीठ पर लादकर ले आता. दादी अब सामान लाने ले जाने के लिए परेशान नहीं होती थी. मन्नू भी अब दादी को खुश होते देख खुश होता. एक रात जब मन्नू बकरियों की रखवाली के लिए बाहर बैठा तो भोला ने गर्दन के इशारे से उसे अंदर जाकर सोने को कहा. मन्नू नहीं समझ पाया तो भोला ने उसका हाथ अपने मुँह से पकड़ा और उसे घर के अंदर धकेल दिया. मन्नू समझ गया कि भोला उसे अंदर घर में सोने को कह रहा है और वह खुद बकरियों की देख भाल करेगा. अब भोला रात में बकरियों की रखवाली भी करने लगा. दो बार बाघ आया तो उसने ढेंचू ढेंचू की आवाज निकाल कर दादी ओर मन्नू को जगा दिया. मन्नू जलती मशाल लेकर आया और बाघ को भगा दिया.

अब मन्नू निश्चिन्त होकर सोता था. उस बाघ का आतंक पूरे गांव में फैलने लगा. ठंड का मौसम था अतः सब घर में सो जाते तो बाघ उनके पालतू पशुओं को आसानी से शिकार करके ले जाता. एक रात तेज बारिश हो रही थी. रात को बाघ मन्नू की बकरियों की तरफ बढ़ा तो भोला ने शोर मचाना शुरू किया लेकिन तेज बारिश की वजह से मन्नू ओर दादी तक शायद आवाज नहीं जा पाई. बाघ एक बकरी को मुँह में भरने ही वाला था कि भोला ने हिम्मत कर जोर से उसे दुलती मारी. बारिश की वजह से फिसलन थी तो दुलती लगते ही बाघ फिसलता हुआ

नीचे घाटी में जा गिरा और मर गया. बाघ के मरने की खबर सुबह सुबह मन्नू और दादी ने भी सुनी. मन्नू ने बकरियों के पास बाघ के निशान देखे तो वह समझ गया कि भोला ने ही बाघ को मारा है. मन्नू ने सारी बात अपनी दादी को बताई तो दादी ने भोला को बहुत प्यार किया और उसे खाने को भी दिया. अब गांव में बाघ की दहशत नहीं थी और भोला ने दादी ओर मन्नू की मुश्किलें भी हल कर दी थीं. अब भोला, मन्नू ओर दादी खुशी से रहने लगे। भोला अब उनके परिवार का सदस्य था.



## साहसी दीपक

लेखिका - कु. चमेली साहू



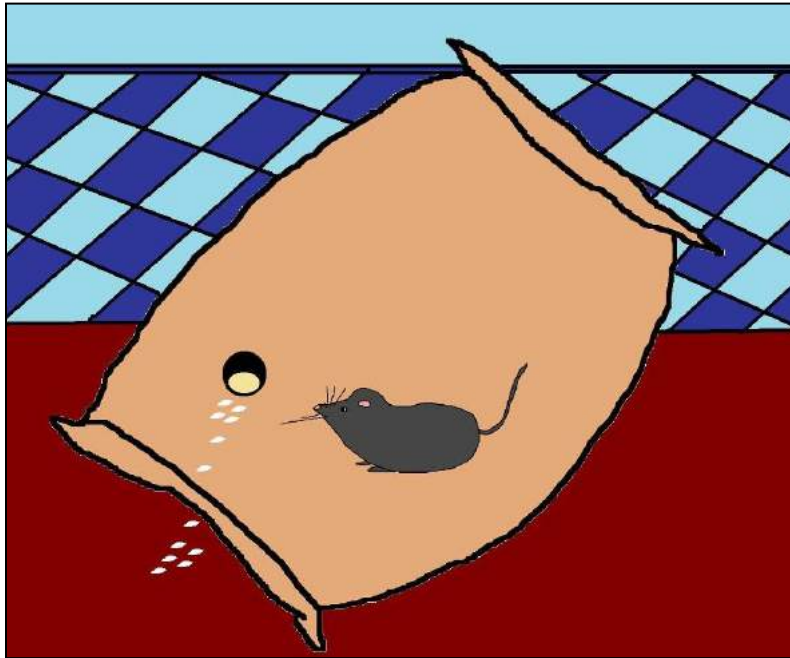
एक दीपक नाम का लड़का था. वह बहुत साहसी था. एक दिन वह स्कूल जा रहा था कि उसने एक आदमी को एक बच्ची को खींचते हुए ले जाते देखा. उसे शक हुआ कि वह आदमी उस बच्ची को ज़बरदस्ती ले जा रहा है. दीपक ने उस आदमी को रोका तो वह भागने लगा. दीपक ने उसपर एक पत्थर फेंका. उस आदमी ने दीपक पर धूल फेंकी. धूल दीपक की आंखों में चली गई. उस आदमी ने दीपक को भी पकड़कर अपनी गाड़ी में ज़बरदस्ती डाल लिया. दीपक को उसने सर पर ज़ोर से मारा जिससे दीपक बेहोश हो गया.

जब दीपक को होश आया तो उसने देखा कि वह एक कमरे में बंद है. कमरे में बड़ा अंधेरा था. दीपक को उस आदमी ने एक रस्सी से बांध दिया था. अचानक दीपक को एक कांच का टुकड़ा ज़मीन पर पड़ा दिखा. वह ज़मीन पर घिसटता हुआ कांच के पास पहुंचा. उसने अपने मुंह में कांच को पकड़ कर रस्सी को काट दिया. फिर वह उस कमरे से निकला. पास के दूसरे कमरे में वह दूसरी बच्ची बंद थी. कमरे के दरवाज़े पर ताला लगा था. दीपक ने एक पत्थर से ताला तोड़ दिया और उस बच्ची को छुड़ा लिया. पास में एक डण्डा भी पड़ा था. दीपक ने उसे उठा लिया और उस आदमी का इंतज़ार करने लगा. थोड़ी देर में वह आदमी वहां लौटकर आया. दीपक छुपकर बैठा था. उसने पीछे से उस आदमी को डण्डा मारा तो वह गिरकर बेहोश हो गया. दीपक छोटी बच्ची को लेकर वहां से भाग निकला.

दीपक ने स्कूल जाकर अपने शिक्षक को सारी बात बताई. शिक्षक के कहने पर पुलिस ने वहां जाकर उस आदमी को गिरफ्तार कर लिया. दीपक के साहस की सभी ने तारीफ की.

## The Greedy Mouse

Author – Dilkesh Kumar Madhukar



A greedy mouse saw a basket full of corn. He wanted to eat it. So he made a small hole in the basket. He squeezed in through the hole. He ate a lot of corn. He felt full. He was very happy.

Now he wanted to come out. He tried to come out through the small hole but he could not. His belly was full. He tried again. But it was of no use.

The mouse started crying. A rabbit was passing by. It heard the mouse's cry and asked: "Why are you crying my friend". The mouse explained: "I made a small hole and came into the basket. Now I am not able to get out through that hole". The rabbit said: "it is because you ate too much. Wait till your belly shrinks." The rabbit laughed and went away.

The mouse fell asleep in the basket. Next morning his belly had shrunk. But the mouse wanted to eat more corn. So he ate and ate. His belly was full once again. He thought "Oh! Now I will go out tomorrow."

A cat was the next passerby. He smelt the mouse in the basket. He lifted its lid and ate the mouse.

Moral - Too much of Greed is Harmful.

Difficult words meaning -

greedy - लालची

squeezed - दब कर

explain - स्पष्ट करना

shrunk - घट गया

lid - ढक्कन

thought - सोचा

corn – अनाज

a lot of - ढेर सारा

shrink - घटना, सिकुड़ना

Passer by - गुजरने वाला

harmful – अहितकर

smelt - सुगंध

hole – बिल, छेद

belly - पेट

fell asleep - सो जाना

lifted - उठाना

through - के जरिए

## बच्चों के चेहरों में सूरज का उग आना

लेखक - प्रमोद दीक्षित 'मलय'



जनवरी 2015 की एक सुबह, सूरज अपनी आग को शनैः-शनैः धधकाने कोशिश में था. सूरज का ताप ओढ़े हुए मैं अपनी बीआरसी नरैनी अन्तर्गत पू०मा०वि० बरेहण्डा गया. प्रार्थना सत्र पूरा हो चुका था और बच्चे कमरों में बैठे थे. यहां पहले भी जाना होता रहा है तो बच्चे खूब परिचित थे. पहुँचते ही बच्चों ने घेर लिया. सबकी चाह थी कि पहले मैं उनकी कक्षा में चलूँ. कोई हाथ पकड़े था तो कोई बैग. मैंने सभी कक्षाओं में आने की बात कही लेकिन असल लड़ाई तो बस यही थी कि मैं पहले किनकी कक्षा में चलूँगा. खैर, मेरी काफी मान-मनौव्वल के बाद कक्षा 8 से मेरी यात्रा प्रारम्भ हुई. बाहर धूप में ही बच्चे बैठे थे. बातचीत शुरू ही हुई थी कि कक्षा 7 के बच्चे भी वहीं आ डटे. त्योहार और शीत लहर के कारण लगभग एक पखवारे की लम्बी छुट्टियों के बाद हम लोग मिल रहे थे. पिछले एक-डेढ़ महीने के

अपने अनुभव बच्चों ने साझा किया. परस्पर खेले गये विभिन्न प्रकार के खेलों की चर्चा, घर में बने पकवानों की चर्चा, खेत-खलिहान की बातें, मकर संक्रान्ति पर पड़ोस के गाँव 'बल्लान' में लगने वाले 'चम्भू बाबा का मेला' की खटमिट्ठी बातें कीं. गुड़ की जलेबी, नमकीन और मीठे सेव, गन्ना (ऊख), झूला में झूलने के साहस और डर भरी बातों के साथ-साथ नाते-रिश्तेदारों की बातें, दादी और नानी की किस्सा-कहानी की बातें, गोरसी में कण्डे की आग में मीठी शकरकन्द भूनकर खाने की स्वाद भरी बातें और न जाने क्या क्या. हां, थोड़ा बहुत पढ़ने की बातें भी कीं. बातें पूरी हो चुकने के बाद (हालांकि बच्चों की बातें कभी पूरी होती नहीं) "चकमक" के दिसम्बर अंक में विद्यालय के कक्षा 8 के बच्चों के छपे गुब्बारे वाले प्रयोग पर विचार-विमर्श हुआ. आगामी मार्च अंक के ज्यामितीय प्रयोग पर अभ्यास हुआ. "खोजें और जानें" के पिछले अंक में कवर पर छपे यहाँ की 'बाल संसद' के चित्र पर भी बच्चों ने अपने और अपने माता पिता के अनुभव बताये. स्कूल की दीवार पत्रिका के आगामी अंक के कलेवर पर संपादक मण्डल के साथ बातें करके मुद्दे तय हुए. यह भी निर्णय हुआ कि अब हर अंक में एक साक्षात्कार अवश्य छापा जायेगा. मनोज और केशकली मिलकर अपने गांव के मिट्टी के बर्तन बनाने वाले का साक्षात्कार लेंगे. साक्षात्कार क्या है और क्यों? साक्षात्कार कैसे लें, क्या और कैसे बातें करें किन मुद्दों पर किस-किस तरह से प्रश्न किया जा सकता है? मिल रहे उत्तर से प्रश्न कैसे पकड़ें? इन सभी बिन्दुओं पर भी थोड़ी बातें हुईं. थोड़ी ही देर में वे दोनों बच्चे 10-12 प्रश्नों की एक प्रश्नावली तैयार कर लाये. वास्तव में प्रश्न चुटीले थे और उनसे कुम्हारगीरी का पूरा चित्र उभरने वाला था. मुझे बेहद खुशी हुई. कौन कहता कि सरकारी विद्यालयों में प्रतिभाएं नहीं हैं. उन्हें ऐसे बच्चों से मिलना चाहिए. अभ्यास के तौर पर कक्षा में ही दोनों बच्चों ने मेरा साक्षात्कार लिया.

थोड़ी ही दूर पर कक्षा 6 के बच्चे बैठे थे. वे मुझे देख रहे थे कि मैं कब उनकी कक्षा में पहुंचूं. तो 7 और 8 के बच्चों से बातें कर मैं कक्षा 6 में गया. बच्चों ने जाते ही शिकायत की कि स्कूल की दीवार पत्रिका में हमारी कक्षा के बच्चों की रचनाएं नहीं छापी जाती हैं. उनकी नजर में हमारी कहानी, कविता, लेख और समाचार ठीक नहीं थे. मैं उनकी बातें देख-सुनकर हंस भी रहा था और सोच भी रहा था कि बड़े बच्चों द्वारा इस प्रकार का व्यवहार ठीक नहीं है. थोड़ी देर में बच्चों ने अपना निर्णय सुना दिया कि वे अब अपनी दीवार पत्रिका अलग से निकालेंगे. मैंने उनसे पत्रिका बनाने की प्रक्रिया को जानना चाहा तो उन सबने विस्तार से न केवल चर्चा की बल्कि संपादन टीम भी बना डाली. संपादक- कोमल, सह संपादक- राकेश, कला संपादक- शिवदेवी, समाचार संपादक- दिनेश और प्रबन्ध संपादक- पंकज. पत्रिका के नाम पर चर्चा हुई. वे मुझसे कोई अच्छा-सा नाम चाह रहे थे. मैंने कहा कि वे अपनी दीवार पत्रिका का नाम स्वयं तय करें. उमंग, तरंग, बाल-बगीचा, फुलवारी, अमराई, सबेरा जैसे नाम आये लेकिन बात बन नहीं रही थी. हर नाम पर बस हाँ, हूँ चल रहा था. तभी मंजू ने सुझाया कि इन्द्रधनुष कैसा रहेगा. सभी बच्चे एक साथ बोल पड़े, हाँ, यह ठीक है. तो कक्षा- 6 की दीवार पत्रिका का नाम हुआ - “इन्द्रधनुष”. उनकी अपनी सामग्री भी लगभग तैयार थी जिसमें कहानी, कविता, पेड़ पर लेख, चुटकुले, गाँव के समाचार, स्कूल की गतिविधियाँ आदि लेकर विद्यालय के प्रांगण में ‘इन्द्रधनुष’ को उतारने में बच्चे जुट गये. बच्चों के जिद भरे आग्रह पर एक सप्ताह बाद ‘इन्द्रधनुष’ के लोकार्पण में शामिल हुआ. बाल अखबार ‘इन्द्रधनुष’ की मनोहारी छटा ने चित्त चुरा लिया. अंजलि, सुनैना, युवराज, राकेश, आशा, वर्षा, पंकज, शिवदेवी ने इसमें रचनाओं के रंग भरे थे. कोमल ने लिखा था एक धारदार संपादकीय कि क्यों जरूरत पड़ी अपनी अलग पत्रिका निकालने की. मैं खुश था कि बच्चों में जिस भाषायी विकास, लोकतांत्रिक समझ और मानवीय मूल्यों के निर्माण के लिए मैंने बाल अखबार बनाने की शुरुआत की



थी उसकी भावना के मर्म का सूत्र बच्चों ने पकड़ लिया था. बच्चों में कल्पना, चिंतन-मनन करने, सामूहिकता, मानवीय एवं पर्यावरणीय चेतना का बीज-वपन हो गया था और वे अपने परिवेश में हो रहे परिवर्तनों को देखने और अभिव्यक्त करने का रास्ता पा गये थे. बाद में उनकी रचनाएं देश की बाल पत्रिकाओं में भी छपने लगीं. विद्यालय प्रांगण में फैले बच्चों के चेहरों पर नन्हे-नन्हे सूरज उग आये थे और उनकी ऊष्मा से मैं एक मुट्ठी गरमाहट लेकर घर की ओर चल दिया.

## बदलाव

लेखक - द्रोणकुमार सार्वी



कुछ दिनों पहले स्कूल में नए खेल शिक्षक का आगमन हुआ था. बच्चों में उत्सुकता थी कि खेल वाले शिक्षक हैं तो कद काठी बड़ी मजबूत होगी और बड़े कड़क होंगे. पर उनका ये अनुमान गलत था. मास्टर जी साधारण कद काठी के और हंसमुख थे. खेल के मैदान में अनुशासित. गुरुजी सब बच्चों को कड़ी मेहनत से खेल की बारीकियां सिखाते थे. ऐसे में कुछ लफंगे उदण्ड लड़के केवल सब पर फब्तियां कसते रहते थे. गुरुजी की नजर इनमें से सबसे बदमाश रवि पर पड़ी. कद काठी और शारीरिक चुस्ती उसमें थी. बच्चों से पूछने पर पता चला कि रवि की उदण्डता के कारण ही वो टीम में नहीं रहता था.

गुरुजी ने रवि को प्यार से समझाकर उसे लगातार अभ्यास कराया. उसमें सचमुच गजब की स्फूर्ति थी, जिनका अहसास उसे हो गया. रवि मन लगाकर खेलने लगा. कुछ दिन बाद रवि राज्य और राष्ट्रीय स्तर के लिए भी सिलेक्ट हो गया. एक

दिन अखबार में उसका फ़ोटो भी छपा. बच्चों ने उसे सम्मान देना शुरू कर दिया. रवि सबकी आंखों का तारा बन गया. धीरे धीरे उनके स्वभाव में काफी परिवर्तन हो गया था. अब उसने नशा-पान करना छोड़ दिया. उनके मन में सबके लिये अपनेपन का भाव उत्पन्न हो गया. वह सबका आदर करता और अपने आचरण को बदलकर अनुशासित रहने लगा. मास्टर जी के सिखाने पर अच्छा खेल कर रवि स्कूल में सबका चहेता बन गया.

## राजा और दर्जी

लेखिका - कविता कोरी



किसी राज्य में एक राजा रहता था. राजा अक्सर गांव-गांव जाकर प्रजा और लोगों की समस्याओं को सुनता था और उनमें सुधार की पूरी कोशिश करता था. उसकी कर्तव्यनिष्ठा के चर्चे दूर देशों तक फैले हुए थे. ऐसे ही एक बार राजा किसी गांव में प्रजा की समस्याओं को जानने के लिए भ्रमण पर निकले हुए थे. उसी दौरान राजा के कुर्ते का एक बटन टूट गया. राजा ने तुरंत मंत्री को बुलाया और आदेश दिया कि जाओ, इस गांव में से ही किसी अच्छे से दर्जी को बुला लाओ, जो मेरे कुर्ते का बटन लगा दे. तुरंत पूरे गांव में अच्छे दर्जी की खोज शुरू हो गई. संयोग से उस गांव में एक ही दर्जी था जिसकी गांव में ही एक छोटी सी दुकान थी. दर्जी को राजा के पास लाया गया. राजा के कहा- मेरे कुर्ते का बटन सिल सकते हो?

दर्जी के कहा- जी हुजूर, ये कौन सा मुश्किल काम है? दर्जी ने तुरंत अपने थैले से धागा निकाला और राजा के कुर्ते का बटन लगा दिया.

राजा ने खुश होकर दर्जी से कहा- बताओ, तुम्हें इस काम के कितने पैसे दूं? दर्जी ने कहा- महाराज ये तो बहुत ही छोटा सा काम था, इसके मैं आपसे पैसे नहीं ले सकता. राजा ने फिर कहा- नहीं तुम मांगो तो सही, हम तुम्हें इस काम की कीमत जरूर देंगे. दर्जी ने सोचा कि बटन तो राजा के पास था ही, मैंने तो बस धागा लगाया है, मैं राजा से इस काम के 2 रुपए मांग लेता हूं. फिर से दर्जी ने मन में सोचा कि मैं राजा से अगर 2 रुपए मांगूंगा तो राजा सोचेगा कि इतने से काम के इतने सारे पैसे मांग रहा है. कहीं राजा ये न सोचे कि बटन लगाने के मुझसे 2 रुपए ले रहा है तो गांव वालों से कितना लेता होगा ये दर्जी? यही सोचकर दर्जी ने कहा- महाराज आप अपनी स्वेच्छा से कुछ भी दे दें. अब राजा को भी अपनी हैसियत के हिसाब से देना था ताकि समाज में उसका रुतबा छोटा न हो जाए. यही सोचकर राजा ने दर्जी को 2 गांव देने का आदेश दे दिया. अब दर्जी मन ही मन में सोचने लगा कि कहां तो मैं 2 रुपए मांगने की सोच रहा था और कहां तो राजा ने 2 गांवों का मालिक मुझे बना दिया.

## दो बाल्टी

लेखक - अजय कुमार कोशले



एक गांव था. गांव में एक किसान रहता था. उस गांव में कुछ वर्षों से अकाल पड़ा था. गांव के पानी की बहुत समस्या थी. सभी लोग दूर नदी से पानी लेने जाते थे. एक किसान के पास दो बाल्टियां थीं. एक बाल्टी अच्छी स्थिति में थी तथा दूसरी बाल्टी में छेद था. किसान रोज़ दोनो बाल्टियों में नदी से पानी लाता था. छेद वाली बाल्टी में घर पहुंचने तक आधा ही पानी शेष रह जाता था और दूसरी बाल्टी में पूरा पानी भरा रहता था.

बिना छेद वाली बाल्टी को स्वयं पर घमंड हो गया. उसने दूसरी बाल्टी से कहा - मैं अपने अंदर पूरा पानी भर कर लाती हूं. तुम्हारे अंदर तो आधा ही पानी रहता है. मैं बहुत अच्छी हूं तो किसान का पूरा सहयोग करती हूं. यह सुनकर दूसरी

बाल्टी उदास हो गई. उसने किसान से पूछा - मुझमें छेद है फिर भी आप मुझमें पानी क्यों लाते हो. किसान मुस्कुराया और बोला - इस बार जब मैं नदी से पानी भर कर लाऊं तो ध्यान से देखना और बताना कि आपको क्या दिखाई दिया. दूसरे दिन जब किसान पानी लेकर आया तो छेद वाली बाल्टी ने देखा कि उसकी ओर भूमि गीली थी तथा उस पर हरी-हरी घास भी थी जबकि दूसरी ओर भूमि सूखी और बिना घास के थी. तब किसान ने उससे कहा कि आपके छेद के कारण की भूमि की सिंचाई हो रही है और अकाल में भी घास निकल सकी है. इसीलिये मैं आपमें पानी लेकर आता हूं.

सीख - हमें कभी भी किसी वस्तु को बेकार समझ कर नहीं फेंकना चाहिए क्योंकि कभी-कभी इसका लाभ कुछ समय के अंतराल में पता लगता है.



## साँप और चूहा

लेखक - द्रोण साहू



बहुत पुरानी बात है. उस समय नाग भी अन्य साँपों की तरह ही था. वह चूहों को खाता भी नहीं था. सब लोग एक साथ मिल-जुलकर रहते थे. एक दिन की बात है, साँप और एक चूहा आस-पास ही खाना ढूँढ़ रहे थे. साँप बहुत लंबा था इसलिए उसका सिर एक जगह रहता तो उसकी पूँछ कहीं दूसरी जगह होती थी. चूहा खाना ढूँढ़ते-ढूँढ़ते अनजाने में ही खाना समझकर साँप की पूँछ को पकड़ लेता था. साँप ने एक बार तो कुछ नहीं कहा, दूसरी बार भी चुप रहा, पर तीसरी बार उससे रहा नहीं गया. उसने चूहे से कहा, दोस्त, यह कोई खाने की चीज नहीं है, बल्कि मेरी पूँछ है. बिल्कुल वैसी ही जैसी तुम्हारी है. चूहे ने भी बड़े भोलेपन से जवाब दिया, सौरी दोस्त, अनजाने में हो गया. क्योंकि तुम बहुत लंबे हो तो तुम्हारी पूँछ कहीं रहती है और तुम्हारा सिर कहीं और रहता है. तो मुझे लगता है कि तुम दूर निकल चुके हो और मैं तुम्हारी पूँछ को खाने की कोई चीज़ समझकर पकड़ लेता हूँ.

दोनों फिर से खाना ढूँढने लगे, पर चूहे ने फिर से वही हरकत दुबारा की. एक बार दो बार नहीं बल्कि बार-बार. अब साँप का गुस्सा बढ़ गया. वह सीधे चूहे की ओर झपटा. चूहा भागने लगा. भागते-भागते वह एक बिल में घुस गया. नाग भी उसके पीछे-पीछे बिल में घुस गया. चूहा बिल के दूसरे सिरे से निकला. साँप भी उसके पीछे-पीछे निकल आया. चूहा आगे आगे और साँप उसके पीछे-पीछे.

चूहा भागते-भागते एक किसान के पास गया. उसने किसान से विनती की - किसान भैया, मुझे बचा लो. साँप मुझे मारना चाहता है. किसान ने कहा - चूहा भाई, मैं तो एक किसान हूँ. धान उगाता हूँ. मैं साँप को मार नहीं सकता. तुम बाल काटने वाले के पास जाओ. चूहा बाल काटने वाले के पास दौड़ा. उसने बाल काटने वाले से भी यही विनती की. बाल काटने वाले ने कहा, दोस्त, मैं तो बस बाल काटने वाला हूँ. मैं तुम्हें साँप से नहीं बचा सकता. तुम लोहे के औजार बनाने वाले के पास जाओ. अब चूहा औजार बनाने वाले के पास भागा. उसके पीछे-पीछे साँप भी दौड़ा चला आ रहा था. लोहे के औजार बनाने वाला भट्ठी में लोहे को गर्म करके उस पर अपना भारी-भरकम हथौड़ा चला रहा था. औजार बनाने वाले का हथौड़ा थोड़ा ऊपर उठा ही था कि चूहा उसके बीच में से कूदकर उस पार निकल गया. साँप भी उसके पीछे-पीछे को कूद गया, पर साँप के ठीक सिर के पास औजार बनाने वाले का भारी-भरकम हथौड़ा आ गिरा - धम्म. साँप वहीं बेहोश हो गया. जब साँप को होश आया तो वहाँ न तो कोई चूहा था और न ही लोहे के औजार बनाने वाला. सभी डरकर भाग गए थे. साँप ने अपने सिर को छुआ तो उसे महसूस हुआ कि उसके सिर के आगे वाला भाग चपटा हो चुका था, तथा वह अन्य साँपों से अलग दिख रहा था. उसी दिन से चूहे और साँप में दुश्मनी हो गई तथा नाग का फन चपटा हो गया.

## कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

बहुत समय पहले की बात है, एक गांव में 2 बिल्लियां रहती थीं. दोनों बहुत ही अच्छी दोस्त थीं और दोनों आपस में बहुत प्यार से रहती थीं. दोनों की दोस्ती का सभी लोग उदाहरण देते थे. वो दोनों बहुत खुश थीं. उन्हें जो कुछ भी मिलता था, उसे आपस में मिल-बांटकर खाया करती थीं.



एक दिन दोनों दोपहर के वक़्त खेल रही थीं कि खेलते-खेलते दानों को ज़ोर की भूख लगी. वो भोजन की तलाश में निकल पड़ीं. कुछ दूर जाने पर एक बिल्ली को एक स्वादिष्ट रोटी नज़र आई. उसने झट से उस रोटी को उठा लिया और जैसे ही उसे खाने लगी, तो दूसरी बिल्ली ने कहा, “अरे, यह क्या ? तुम अकेले ही रोटी

खाने लगीं ? मुझे भूल गई क्या ? मैं तुम्हारी दोस्त हूं और हम जो भी खाते हैं आपस में बांटकर ही खाते हैं.

पहली बिल्ली ने रोटी के दो टुकड़े किए और दूसरी बिल्ली की ओर एक टुकड़ा बढ़ा दिया. यह देख दूसरी बिल्ली फिर बोली, “यह क्या, तुमने मुझे छोटा टुकड़ा दिया. यह तो ग़लत है.

इस कहानी को बहुत से लोगों ने पूरा करके भेजा है. उसमें से कुछ हम नीचे दे रहे हैं.

### कु. मधु सुमन हिमांचल व्दारा पूरी की गई कहानी

उन्होंने बंदर को सारी बात बताई और उससे फैसला करने को कहा. बंदर सारी बात सुनकर एक तराजू लेकर आया और उसने दोनों टुकड़े एक एक पलड़े में रख दिये. तौलते समय जो पलड़ा भारी हुआ, उस तरफ की रोटी का एक टुकड़ा तोड़ के अपने मुंह में डाल लिया. अब दूसरी तरफ का पलड़ा भारी हो गया. तब बंदर ने उस तरफ की रोटी का टुकड़ा तोड़ कर अपने मुंह में डाल लिया. इस तरह बंदर कभी इधर से तो कभी उधर से ज्यादा होने की बात कहकर रोटी तोड़-तोड़ कर अपने मुंह में डालता गया. दोनों बिल्लियां चुपचाप बंदर के फैसले का इंतजार करती रहीं. जब बिल्लियों ने देखा कि रोटी का टुकड़ा तो बहुत छोटा रह गया, तब बिल्लियां बोली आप चिंता ना करें, हम अपना बंटवारा स्वयं कर लेंगे. इस पर बंदर बोला- ‘आप जैसा ठीक समझो, परंतु मुझे अपनी मेहनत की मजदूरी मिलनी चाहिए.’ इतना कहकर बंदर ने बाकी बचे हुए रोटी के दोनो टुकड़े अपने मुंह में रख लिये और वहां से भाग गया. दोनों बिल्लियों को अब अपनी गलती समझ में आई कि आपस में झगड़ना बहुत बुरी होती है, और दूसरे इसका फायदा उठा सकते हैं. इसलिए हमेशा सतर्क रहना चाहिए और हमें कभी भी लड़ाई झगड़ा नहीं करना चाहिए.

## धारिणी सोनी व्दारा पूरी की गई कहानी

तभी वहां एक बंदर आया. वह सभी जानवरों में सबसे बुद्धिमान था. बंदर दोनो बिल्लियों की दोस्ती के बारे में जानता था. उसे यकीन नहीं हुआ कि दोनो एक रोटी के लिए झगड़ रहे हैं. उसने दोनो को शान्त कराया और रोटी का टुकड़ा सामने रख दिया. सारे जानवरों के सामने उसने इस झगड़े का कारण पूछा. पहली बिल्ली बोली - 'यह रोटी मुझे मिली थी. मैंने जब इसे आधा दिया तो यह एहसान मानने के बदले मुझसे लड़ने लगी.' दूसरी बिल्ली बोली - 'हम दोनो हमेशा बराबर बांट कर खाते हैं पर आज यह खुद को बड़ा और मुझे छोटा टुकड़ा दे रही थी इसलिये मैंने बराबर करने को कहा तो यह लड़ाई करने लगी. इससे कहिए कि दोनो टुकड़े बराबर करें.'

पहली बिल्ली ज़िद पर अड़ी रही और नहीं मानी. दोनो के झगड़े को सुलझते नहीं देख कर बंदर को एक उपाय सूझा. उसने रोटी का एक छोटा टुकड़ा उठाया और मुंह में डालने लगा. अपने दोस्त की रोटी बंदर को खाते देखकर दूसरी बिल्ली ज़ोर से बोली - 'रुकिए बंदर महोदय. मुझे रोटी नहीं चाहिए. आप यह पूरी रोटी मेरी दोस्त को दे दीजिए.' यह सुनकर सारे जानवर, बंदर और पहली बिल्ली सब उसकी तरफ आश्चर्य से देखने लगे. किसी को समझ में नहीं आया कि कुछ देर पहले जो रोटी के लिए लड़ रही थी वह अपनी दोस्त को रोटी देने के लिए कैसे मान गई.

पहली बिल्ली रोटी लेकर उसके पास आई और पूछने लगी कि मित्र तुमने ऐसा क्यों कहा. दूसरी बिल्ली बोली - 'भले ही तुम मुझे यह रोटी न दो पर तुम्हारे हक की रोटी कोई और खाए यह मैं नहीं होने दूंगी.' यह सुनकर पहली बिल्ली शर्मिंदा हो गई. रोटी के छोटे टुकड़े के लिये वह अपनी अच्छी दोस्त से झगड़ा कर बैठी थी. उसने अपनी दोस्त से माफी मांगी और रोटी के दो बराबर टुकड़े करके एक टुकड़ा अपनी दोस्त को दे दिया.

तभी बंदर उनके पास आया और बोला - 'तुम दोनों के झगड़े को शांत करने और अपनी गलती का अहसास कराने के लिये ही मैंने यह तरीका निकाला था. कभी भी अपनी दोस्ती के बीच ऐसे छोटे-मोटे झगड़े को हावी मत होने देना और मिलकर रहना. फिर क्या था दोनों ने एक-दूसरे को गले लगा लिया और सब जानवर खुशी से दोनों बिल्लियों को घेर कर नाचने लगे.

### श्रीमती भावना सिंह व्दारा पूरी की गई कहानी

बंदर बिल्लियों को समझाने लगा लेकिन दोनों नहीं मानी. बंदर खुद रोटी खाना चाहता था. बंदर के मन में क्या चल रहा है यह बात बिल्लियां समझ गईं. उन्होंने सोचा कि बंदर भी हमारा दोस्त है. हमेशा उसने हमारी मदद की है. इसलिए उन्होंने आपस में बात की और लड़ना छोड़ दिया. रोटी के तीन टुकड़े करके एक बंदर को भी दिया. बंदर को भी अपनी गलती का एहसास हुआ. उसने कभी भी दोस्तों को धोखा ना देने का निर्णय लिया. तीनों एक साथ बाहों में बाहें डालकर घूमने निकल गए.

### अगले अंक के लिये अधूरी कहानी - अनोखी तरकीब

बहुत पुरानी बात है. एक अमीर व्यापारी के यहाँ चोरी हो गयी. बहुत तलाश करने के बावजूद सामान न मिला और न ही चोर का पता चला. तब अमीर व्यापारी शहर के काजी के पास पहुँचा और चोरी के बारे में बताया.

सब कुछ सुनने के बाद काजी ने व्यापारी के सारे नौकरों और मित्रों को बुलाया. जब सब सामने पहुँच गए तो काजी ने सब को एक-एक छड़ी दी. सभी छड़ियाँ बराबर थीं. न कोई छोटी न बड़ी.

सब को छड़ी देने के बाद काजी बोला, “इन छड़ियों को आप सब अपने अपने घर ले जाएँ और कल सुबह वापस ले आएँ”.



इस मज़ेदार कहानी आपको पूरा करके हमें [dr.alokshukla@gmail.com](mailto:dr.alokshukla@gmail.com) पर भेज दीजिये. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.



## चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -



इस चित्र पर हमें अनेक कहानियां मिली हैं जिनमें से कुछ को हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं.

### जंगल की मित्रता

लेखिका - जयश्री कर्ष

एक जंगल था. जहां सभी जानवर मिलजुल कर रहते थे. इसी जंगल में चार मित्र थे, हिरण, कौआ, चूहा और कछुआ. उनकी मित्रता दूर-दूर तक सभी जानते थे. यह

चारों मित्र मिलकर सभी की मदद करते थे. तभी वहां एक शिकारी आया, जिसकी खबर कौए ने उनको दी. सभी डर गए, क्योंकि वह हिरण को पकड़ने आया था. लेकिन कछुए ने सभी का होंसला बढ़ाया और कहा कि जब तक हम सब एक हैं तब तक कोई हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता.

एक दिन हिरण पानी की खोज में गया. अन्य तीनों मित्र अपने भोजन के प्रबंध में लगे हुए थे. देर रात तक हिरण लौटकर नहीं आया तो सभी मित्र चिंतित हो गए. वे उसे ढूँढने लगे. कौए ने कहा - 'मैं पता लगा कर आता हूं'. तभी उसे हिरण दिखा. उसका पैर जाल में फंसा हुआ था. वह उसके पास गया और बोला - 'तुम चिंता मत करो. मैं बाकी मित्रों को बुला कर लाता हूं.' सभी मित्र हिरण के पास पहुंचे. हिरण ने कहा - 'अरे तुम सब यहां क्यों आ गए? अगर शिकारी आ गया तो वह तुम्हें भी पकड़ लेगा.' तभी शिकारी वहां पर आ गया. उसने कछुए को पकड़ लिया. लेकिन तब तक चूहे ने हिरण का जाल काट दिया था.

उन्होंने तुरंत योजना बनाई. हिरण चुपचाप लेट गया और उसे कौआ नोचने का अभिनय करने लगा. यह देखकर शिकारी हिरण की ओर लपका. उसने कछुए को वहीं छोड़ दिया. तभी चूहे ने कछुए के पैर की रस्सी को काट दिया. कछुआ तुरंत पानी में चला गया. उधर हिरण ने शिकारी को आते देखा तो उठ कर भाग गया और कौआ फुर्र से उड़ गया. शिकारी के हाथ कुछ ना लगा. मरे हुए हिरण को भागता देखकर शिकारी डर गया. उसे लगा यह जंगल शापित है. वह भूत भूत चिल्लाता हुआ भाग खड़ा हुआ. चारों मित्र यह देखकर खूब हंसे और खुशी खुशी जंगल में रहने लगे.

## चार मित्र

लेखक - नंदनी राजपूत

पुराने समय की बात है एक जंगल में कौआ, एक चूहे के बिल के पास घोंसला बना कर जीवन यापन कर रहा था. एक दिन कौआ, चूहे की बिल के पास गया और उसे आवाज दी. चूहा बिल से बाहर निकला. उसने कौवे से पूछा कि तुम्हें मुझसे क्या काम है? कौवे ने कहा हम एक दूसरे के पड़ोसी हैं, अतः हम दोनों अच्छे मित्र बन सकते हैं. चूहे ने कहा मैंने तो कौवे और चूहे की दुश्मनी के बारे में ही हमेशा सुना है. कौवे चूहे को अपना शिकार बनाते हैं. मैं तुमसे दोस्ती नहीं कर सकता. परंतु कौवे ने चूहे को भरोसा दिलाया कि वह कभी उसका शिकार नहीं करेगा. हमेशा पक्का दोस्त बनकर ही रहेगा. इस प्रकार दोनों अच्छे दोस्त बन गए और खुशी-खुशी जीवन व्यतीत करने लगे.

एक दिन की बात है कौवे ने चूहे से कहा - 'हम इस जंगल में चैन की जिंदगी नहीं जी सकते क्योंकि यहां से शिकारियों का गुजरना बहुत होता है. मैं पहले एक और हरे-भरे मैदान में एक जल सोते के किनारे अपने एक अन्य मित्र कछुए के साथ रहता था. वहां बड़ी अच्छी जगह है और खाने-पीने की चीजें भी बहुतायत से हैं. अगर तुम तैयार हो तो हम वही चलते हैं.' चूहा कौवे की बात मान गया. कौवे ने चूहे को एक टोकरी में रखा और उस टोकरी को अपनी चोंच में दबाकर उस हरे मैदान की ओर रवाना हुआ, जहां कछुआ रहता था. कछुआ कौवे को देखकर बहुत खुश हुआ. कौवे ने चूहे के साथ अपनी दोस्ती की पूरी कहानी बताई. वह तीनों बहुत देर तक एक साथ बैठे रहे और इधर-उधर की बातें करते रहे. अचानक उन्होंने एक हिरण को देखा, जो उनकी ओर चला आ रहा था. उन्हें लगा कोई

शिकारी हिरण का पीछा कर रहा है, अतः तीनों मित्र अलग अलग दिशा में भागे. परंतु हिरण ने उस स्थान पर आकर से पानी पिया. जब तीनों दोस्त वापस आए तो हिरण से भागने का कारण पूछा. कौवे ने उसने कहा - 'मैंने कुछ दूर एक काली चीज देखी तो मुझे लगा कोई शत्रु है, अतः मैं भाग निकला. परन्तु तुम तो सीधे-साधे पशु हो. तुम किसी को परेशान भी नहीं करते. हम तीन दोस्त यहां बड़े प्रेम से रहते हैं. तुम चाहो तो हमारे साथ रह सकते हो.' हिरण ने यह स्वीकार कर लिया. अब चारों दोस्त खुशी से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे.

एक दिन कौआ, कछुआ और चूहा तीनों तालाब के पास पहुंचे किंतु हिरण नहीं आया. तीनों परेशान हो गए. कछुए और चूहे के कहने पर कौए ने आसपास उड़ कर देखा, तो उसे पता चला कि हिरण एक शिकारी के जाल में फंस गया है. कौए ने चूहे से कहा यह बलिदान का समय है. तुम जल्दी से हिरण के पास पहुंचो और उसे आजाद कराओ. चूहा वहां पहुंचा और उसने अपने तेज दांतों से जाल काट दिया. हिरण आजाद हो गया. इस बीच कछुआ भी वहां पहुंच गया. हिरण ने कछुए से कहा - 'मेरे मित्र अब हमें यहां से भागना है, तुम यहां क्यों चले आए? तुम भागोगे कैसे?' कछुए ने कहा कि मैंने दोस्ती का हक अदा किया है. तीनों दोस्तों ने कछुए से कहा - 'जितना तेज भाग सकते हो, भागो!' यह कह कर तीनों तेजी से भाग निकले. उसी समय शिकारी वहां आया. उसने देखा कि जाल कटा हुआ है और हिरण भाग गया है. शिकारी ने चारों ओर देखा तो उसे कुछ दूरी पर कछुआ नजर आया. शिकारी ने उसे ही पकड़ लिया और उसे थैली में डालकर आगे बढ़ने लगा.

जब चूहा, कौवा और हिरण एक दूसरे से मिले तो उन्होंने देखा कि कछुआ नहीं है. वह समझ गए कि शिकारी ने कछुए को पकड़ लिया है. सभी दुखी हुए और अपने दोस्तों को छुड़ाने की तरकीब सोचने लगे. कौआ ने कहा - 'हम सब एक नाटक करते हैं. हिरण तुम शिकारी के रास्ते में जा कर लेट जाओ. मैं तुम पर झपटूंगा और इस प्रकार हमला करूंगा मानो तुम्हारी आंख निकाल रहा हूं. शिकारी तुम्हें देख लेगा. तुम अपनी जगह से उठना और लड़खड़ाते हुए भागना शुरू कर देना. शिकारी समझेगा कि तुम तेजी से नहीं भाग सकते. अतः वह तुम्हें पकड़ने का प्रयास करेगा. जब शिकारी करीब आए तो तुम अपनी रफ्तार तेज कर देना. शिकारी तेज दौड़ने के प्रयास में झोली वही जमीन पर डाल देगा. यहां पर चूहा जाल को काट देगा और कछुआ आजाद हो जाएगा.'

तीनों को यह तरकीब बहुत अच्छी लगी. नाटक के अनुसार हिरण ने वैसा ही किया जैसा बोला गया था. शिकारी ने हिरण को पकड़ने के लालच में कछुए को जमीन पर रख दिया. चूहे ने जाल काटकर कछुए को आजाद कर दिया. उधर कौवा पूरी प्रक्रिया की निगरानी कर रहा था. जब उसने देखा कि कछुआ और चूहा सुरक्षित स्थान पर गए तो उसने हिरण को उसकी सूचना दे दी. हिरण तेजी से भाग निकला. शिकारी हिरण पकड़ नहीं सका और निराश होकर अपनी झोली की ओर लौटा. उसने देखा कि कछुआ भी भाग चुका है. उसने बड़े दुखी मन से अपनी झोली उठाई और शहर लौट गया. इस प्रकार चारों दोस्तों ने मिलकर अपनी समझदारी से शिकारी से अपने आप को बचाया.



इस कहानी से यही शिक्षा मिलती है कि एकता और सहयोग से किये गए कार्य में हमेशा सफलता मिलती है. साथ मिलकर ही बड़ी से बड़ी परेशानी का सामना किया जा सकता है.

अब आप लक्ष्मी मधुकर जी का बनाया गये नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें [dr.alokshukla@gmail.com](mailto:dr.alokshukla@gmail.com) पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.



## हार क्यूँ माने

लेखक - अरविंद वैष्णव



परेशान दिल को करार न आया

इक सवाल का जवाब न आया

बच्चे भूलकर खेलने लगे कहीं

मानो चांद छुप गया बादलों में कहीं

हम कहते रहे पढ़ना है जरूरी

वो कहते रहे ठंड बहुत है सर जी

विचार बदलकर करवाया योगा



बच्चे चिल्लाये कि अब जाड़ा भागा  
'सूरज', 'गगन', 'बरखा' नाम बड़े हैं प्यारे  
राष्ट्र निर्माता हैं बताइये हार क्यूँ माने  
नवीन प्रयोगों से नवाचार करते रहिये  
"अरविंद" सीखते और सिखाते रहिये

## आसमान गिर रहा है

लेखक - रघुवंश मिश्रा



घने जंगलों में,

एक खरगोश रहता था

दिन भर ईधर-उधर,

घूमा-फिरा करता था

दोपहर में सोये सोये,

उसने सुनी आवाज

आसमान गिर रहा है,

लगा लिया अंदाज़

तुरंत उठकर वहां से  
भागा वह सरपट  
दूसरे जानवर भी भागे  
खरगोश के पीछे झपटपट

आखिर में जंगल का राजा  
शेर सामने आया  
पूछा गिर रहा है आसमान  
यह किसने बतलाया

सभी जानवरो बारी-बारी  
एक दूसरे के नाम बतलाये  
शेर बोला सभी से  
चलो उस जगह पर जायें

सभी पहुंचे उस जगह,  
आवाज सुनाई दी थी जहां

एक बड़ा नारियल फल,

गिरकर पड़ा था वहां

खरगोश की मूर्खता,

सभी को समझ में आयी

एक-दूसरे से कहा,

अकारण ही दौड़ लगाई

देख सभी का गुस्सा,

खरगोश थरथर कांपने लगा

बिना कुछ बोले

झटपट झाड़ियों में भागने लगा

26 जनवरी आई है

लेखिका - श्वेता तिवारी



अमर रहे गणतंत्र हमारा

यही संदेशा लाई है

फहराता रहा तिरंगा झंडा

भवनों पर मैदानों में

देशभक्ति का भाव है जागा

बच्चों बड़ों सयानों में

आज सभी ने मिलकर

भारत माँ की जयकार गुँजाई है

26 जनवरी आई है

झंडा वंदन करके सबने  
जनगणमन मिल गाया है  
भारत माँ की रक्षा का  
सबने संकल्प दोहराया है  
हर आयोजन में बच्चों को  
बँटती आज मिठाई है  
26 जनवरी आई है

नौजवान वीर परेड हैं करते  
कदम मिलाकर चलते  
वीर-साहसी बच्चे  
हाथी की सवारी है  
झाँकियो की छटा  
खुशी हर मन में छाई है  
26 जनवरी आई है

## अनुभव

लेखिका - श्रद्धा श्रीवास्तव



अनुभव हमारी सीख है

अनुभव हमारा ज्ञान है

अनुभव से ही जीवन में

बनती पहचान है

अनुभव हमारा मीत है

अनुभव हमारा मान है

मुश्किलों में अनुभव ही

आता हमारे काम है

## आ गे नवाचार

लेखक - अजहरुद्दीन अंसारी



आ गे नवाचार संगी आ गे नवाचार

जम्मो लइका इसकुल आवा होवत है पुकार

खेल खेल में पढई लिखई खेल हे हजार

आ गे नवाचार संगी आ गे नवाचार

मार पिटई कब के नंदागे मिले प्यार दुलार

आ गे नवाचार संगी आ गे नवाचार



ए बी सी डी क ख ग घ छूटगे रट्टामार

आ गे नवाचार संगी आ गे नवाचार

बदलत हे गा जुग जबाना करले तहूँ सुधार

आ गे नवाचार संगी आ गे नवाचार

जोड़ घटाव गोटी बाटी मा लेनी देनी बजार

आ गे नवाचार संगी आ गे नवाचार

हपता भर के लिखई पढई तहाँ ले इतवार

आ गे नवाचार संगी आ गे नवाचार

मोनू सोनू सुनीता रानी हो जा चल तइयार

जम्मो लइका इसकुल आवा होवत हे पुकार

## कर्म करो

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी



कर्म किये जा प्रेम से, चिन्ता में क्यों रोय ।  
जैसा तेरा कर्म हो, वैसा ही फल होय ॥

सबका आदर मान कर, गीता का है ज्ञान ।  
बैर भाव को छोड़कर, लगा ईश में ध्यान ॥

झूठ कपट को त्याग कर, सब पर कर उपकार ।  
दया धरम औ दान कर, होगा बेड़ा पार ॥

धन दौलत के फेर में, मत पड़ तू इंसान ।  
करो भरोसा कर्म पर, मत बन तू नादान ॥

कंचन काया जानकर, करो जतन तुम लाख ।  
माटी का ये देह है, हो जायेगा राख ॥

## गुड़िया रानी

(सार छंद)

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी



छमछम करती गुड़िया रानी, खेले छपछप पानी ।  
उछल कूद वह करती रहती, डाँटे उसको नानी ॥

बस्ता लेकर जाती शाला, ए बी सी डी पढ़ती ।  
कभी बनाती चित्र अनोखे, कभी मूर्ती गढ़ती ॥

साफ सफाई रखती अच्छी, कचरा पास न फेंके ।  
कूड़ा कर्कट आग लगाकर, हाथ पैर को सेंके ॥

सबकी प्यारी गुड़िया रानी, दिनभर शोर मचाती ।  
खेलकूद में अक्वल रहती, सबको नाच नचाती ॥

## गुरु कैसे हों

लेखक - विकास कुमार हरिहारनो



बच्चों संग, बच्चों को जैसे,  
समझ आए समझाएं ।  
नवप्रयोग और नवाचार की,  
राह उन्हें दिखलाएं ।  
खुद भी चलें, उन्हें चलाएँ,  
सद् मार्ग बतलाएँ ।  
जीवन का हल कैसे निकले,  
ऐसा गणित सुझाएं ।  
नेक बने, विवेक भी आए,  
सदाचार ही सदा पढ़ाएँ ।  
स्वप्न हकीकत में जो बदलें,  
ऐसी युक्ति बुझाएँ ।

## चिट् मिट् खेलते

लेखक - नवीन कुमार तिवारी



चिट् मिट् खेलते, नन्हा दोस्त साथ ।

चूं चूं की नाद सुनते, खिला दाना हाथ ॥

नन्हे नन्हे चलें कदम, थकते लगती प्यास ।

पानी पीते घूमते, सोचे माता पास ॥

आती यार्दे झूमती, रहते तभी उदास ।

कैसे भूलें सोचते, दाना चुगते खास ॥

## ठंडा-ठंडा कूल-कूल

लेखक - गोपाल कौशल



मौसम हुआ ठंडा-ठंडा कूल-कूल  
मम्मी मैं कैसे जाऊँ स्कूल ।  
पहना मैंने टोपा, स्वेटर  
फिर भी है ठंड जैसे हो शूल ॥

हम नन्हें-नन्हें खिलते फूल  
कंपकपाती ठंड में रहे ठिठुर ।  
मन को भाते जलते अलाव  
होमवर्क करना जाते हैं भूल ॥

## तुलसी

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी



घर अँगना अउ चउक मा, तुलसी पेड़ लगाव ।  
पूजा करके प्रेम से, पानी रोज चढ़ाव ॥  
तुलसी हावय जेन घर, वो घर स्वर्ग समान ।  
रोग दोष सब दूर कर, घर मा लावय जान ॥  
तुलसी पत्ता पीस के, काढा बने बनाव ।  
सरदी खाँसी रोग मा, खाली पेट पियाव ॥  
तुलसी पत्ता टोर के, रोज बिहनिया खाव ।  
स्वस्थ रहय जी देंह हा, ताकत बहुते पाव ॥  
तुलसी माला घेंच मा, पहिरय जे दिन रात ।  
मिटथे कतको रोग हा, कभू न होवय वात ॥  
तुलसी पत्ता खाय जे, बाढ़य ओकर ज्ञान ।  
मन पवित्र हो जात हे, लगय पढ़य मा ध्यान ॥  
तुलसी माला जाप कर, माता खुश हो जाय ।  
बाढ़य घर मा प्रेम जी, संकट कभू न आय ॥



## नवा बछर

लेखक - रामफल यादव



नवा बछर के नवा किरन ह,  
आज बहुत मुसकावत हे।  
खुसी के बड़का मोटरा बाँधे,  
जग ल बड़ दुलरावत हे।  
उठव चलव मोर संग संगी,  
जाँगर के बाँधव बाना रे।  
रुख म बड़ठे पंछी गाए,  
पिरित के गुरतुर गाना रे।  
बड़ पिरोही पुरवइया हे,  
कुँवर बिरवा ह पुचकारत हे।  
खुसी के बड़का मोटरा बाँधे,  
जग ल बड़ दुलरावत हे।



आज बेरा हे करतब अपन,  
चिन्हकेहम आगु जावन।  
नदिया नरवा के निरमल जल,  
देवत हवय एहि सिखावन।  
सरलग चलइया ठिहा पाथे,  
गोठ एहि सिखावत हे।  
खुसी के बड़का मोटरा बाँधे,  
जग ल बड़ दुलरावत हे।  
गड़े न काँटा पाँव म कखरो,  
दुख के बेरा झन आवय।  
घरोघर सुख सुमत के मोंगरा,  
गमकय अऊ महमही बगरावय।  
पर उपकार करलव संगी,  
जिनगी ल हुलसावत हे।  
खुसी के बड़का मोटरा बाँधे,  
जग ल बड़ दुलरावत हे।

## मोर स्कूल

लेखक - अनकेश्वर प्रसाद महिपाल



अब्बड़ सुधघर हावै संगी,  
स्कूल हा मोर जी.....  
आके देख ले दिल,  
खुश हो जाही तोर जी.....  
खेलकूद योग प्रार्थना,  
रोज रोज करथन,  
लइका मड़ई मा,  
झूम झूम नाचथन,  
चैंपियन स्कूल बनिस संगी  
बगरिस अंजोर जी.....  
अब्बड़ सुधघर हावै संगी,  
स्कूल हा मोर जी.....

गणित अंग्रेजी पढे मा,  
बड़ मजा आथे ,  
सुधघर सुधघर बात हमर,  
गुरुजी मन बताथे,  
पेपर मा हमर फोटो छपथे,  
होवथे बडा शोर जी.....  
अब्बड़ सुधघर हावै संगी,  
स्कूल हा मोर जी. ....  
सरस्वती माता के मंदिर मा,  
ज्ञान के ज्योत जलाथन,  
हाथ धुलाई करके,  
मध्यान्ह भोजन खाथन,  
जुरमिल के पढ़थन सबो,  
नइ हे कोनो चोर जी,  
अब्बड़ सुधघर हावै संगी,  
स्कूल हा मोर जी. ....  
अब्बड़ सुधघर हावै संगी,  
स्कूल हा मोर जी. ...

## पर्यावरण

लेखक - बलराम नेताम



दिनों दिन कटावत हे, रुखराई,  
परदूषित होवत हे, पर्यावरन भाई,  
सुनले ददा, सुनले ओ मोर दाई,  
पर्यावरन मा हे जम्मो लोगन के भलाई,  
लोगन के भलाई के खातिर, मन ला बन से मिलाय बर लागहि,  
ये पर्यावरन बर संगवारी, पेड़ जगाय बर लागहि।।

जइसन जइसन, पेड़ कटावत हे,  
तइसन तइसन, फैक्टरी बनावत हे,  
सब अपन अपन, मन मर्जी चलावत हे,  
कुआं नदिया तरिया डबरी अटावत हे,  
कुआँ डबरी के खातिर मन ला, बन से मिलाय बर लागही,  
ये पर्यावरन बर संगवारी पेड़ लगाय बर लागहि।।

आज जेन डाहर, देखव, तौन डाहर कुहरा निकलत हे,  
अइसन परदूषन मा संगवारी, मन ह घलो बिखलत हे,  
ऐ परदूषन मा संगी, गेलेशियर ह घलो पिघलत हे,  
एहि ग्लेशियर के खातिर मन ला, बन से मिलाय बर लागहि,  
ये पर्यावरन बर संगवारी, एक पेड़ जगाय बर लागहि।।  
पेड़ बचाय बर लागहि पेड़ लगाय बर लागहि।।

## प्यारी धरती

लेखिका - जागृति मिश्रा "रानी"



सुन हे, मानव मैं धरती हूं,  
तेरी झोली भरती हूं ।

एक बात तू बता अभी,  
मनन गहन भी किया है कभी ।

जब मिल जुलकर सब रहते,  
हैं परिवार उसी को कहते ।

मैं मां हूं तेरी सुन बेटा, पर्यावरण है तेरा भाई,  
बैर निकाले उससे तू क्यों, करता है किसलिए लड़ाई ।

मैं तो मां हूं तुझे बताकर, अपना धर्म निभाऊंगी ही,  
वक्त अभी है, अरे संभल जा, वर्ना अश्रु बहाऊंगी ही ।

मौसम जाड़े का  
प्रमोद दीक्षित 'मलय'



गोभी गाजर लाल टमाटर, मौसम जाड़े का।  
मूली धनिया बैंगन भुर्ता, मौसम जाड़े का॥  
मटर मूंगफली सिंघाड़ा, औ शाक चने का भी।  
दूध जलेबी गरम समोसा, मौसम जाड़े का॥  
अलसी सरसों मीठा गन्ना, तिल्ली उड़द मसूर,  
ज्वार बाजरा, कैथा कॉफी, मौसम जाड़े का॥  
निकले कम्बल, शूट रजाई, मफलर टोपा भी।  
मीठी खीर शकरकन्दी की, मौसम जाड़े का॥  
सूरज खोया बीच बादलों, और कुहासा छाया।  
किट्-किट् पढ़ते दांत पहाड़ा, मौसम जाड़े का॥



## रंगों का मेल

लेखक - दीपक कंवर



लाल पीला कहाँ है दिखता।  
सुबह शाम सूरज है उगता ॥  
काला किसे सुहाता है।  
जब बादल बन आता है॥  
नीला रंग कहाँ मिलेगा।  
आसमान खुला दिखेगा॥  
हरा.हरा किसने है पाई।  
धरती मे हरियाली छाई॥  
सादा रंग है सबसे प्यारा।  
चंदा मामा सबसे न्यारा॥  
इंद्रधनुष का खेल देखा।  
सब रंगों का मेल देखा॥



## रीढ़ की हड्डी

लेखिका - सुनीला फ्रैंकलिन



कई दिनों से पीठ में बहुत दर्द था  
डाक्टर ने कहा  
अब और  
झुकना मत  
अब और झुकने की  
गुंजाइश नहीं  
तुम्हारी रीढ़ की हड्डी में गैप आ गया है  
सुनते ही उसे  
हँसी और रोना  
एक साथ आ गया..

ज़िंदगी में पहली बार  
वह किसी के मुँह से  
सुन रही थी  
ये शब्द ...

बचपन से ही वह  
घर के बड़े, बूढ़ों  
माता-पिता  
और समाज से  
यही सुनती आई है,  
झुकी रहना...

औरत के  
झुके रहने से ही  
बनी रहती है गृहस्थी..  
बने रहते हैं संबंध  
प्रेम..प्यार,  
घर परिवार  
वो  
झुकती गई  
भूल ही गई  
उसकी कोई रीढ़ भी है..  
और ये आज कोई  
कह रहा है  
झुकना मत..

वह परेशान सी सोच रही है  
कि क्या सच में

लगातार झुकने से रीढ़ की हड्डी  
अपनी जगह से  
खिसक जाती हैं  
और उनमें  
खालीपन आ जाता है..

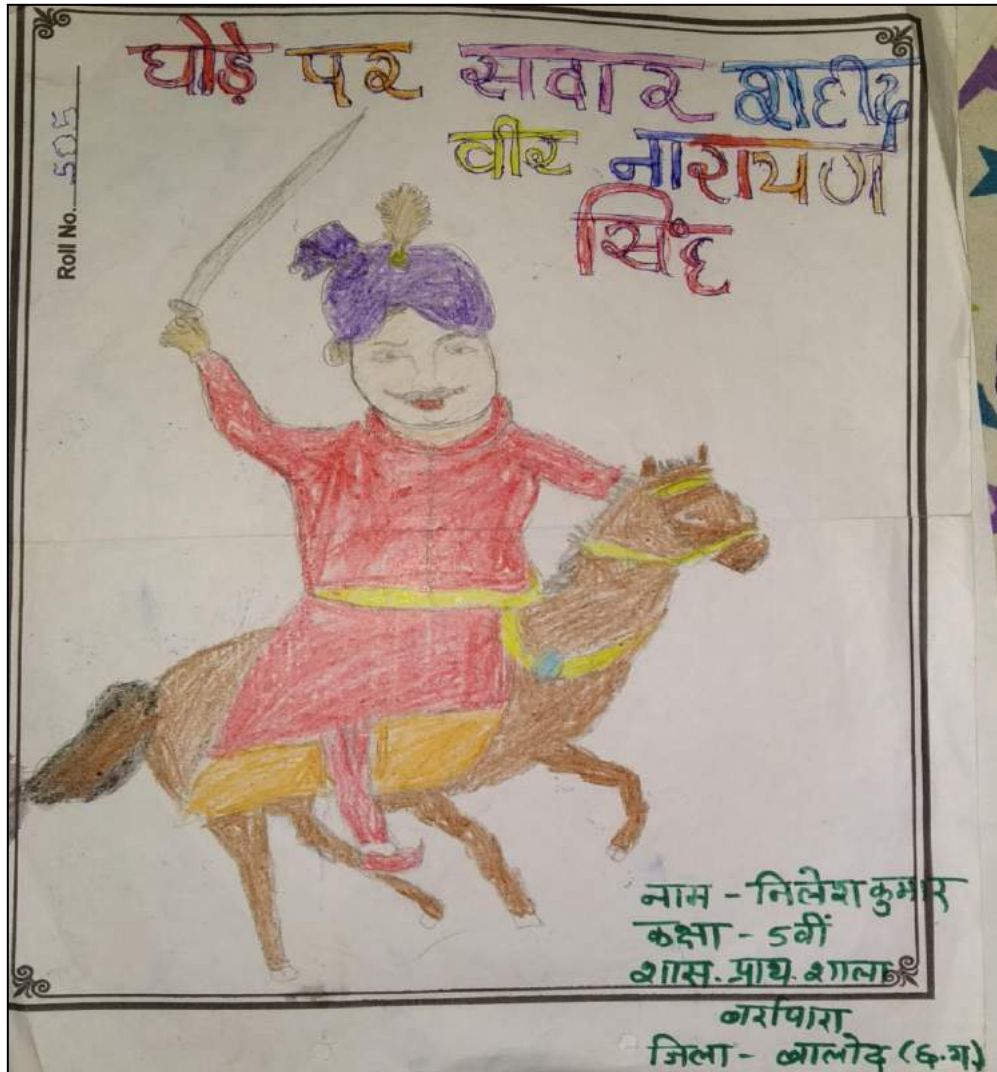
वह सोच रही है...  
बचपन से आज तक  
क्या क्या खिसक गया  
उसके जीवन से  
बिना उसके जाने समझे...

उसका  
अल्हड़पन  
उसके सपने  
उसका मन  
उसकी चाहत..  
इच्छा,अनिच्छा  
सच  
कितना कुछ खिसक गया  
जीवन से..

क्या वाकई मैं औरत की  
रीढ़ की हड्डी बनाई है भगवान ने  
समझ नहीं आ रहा.....

## वीर नारायण सिंह को नमन

लेखक - द्रोणकुमार सार्व



धधक रही है आज भी धरती,  
बनके सोनाखान  
यह कि पाऊँ आज मैं बेटा,  
बने जो वीर नारायण महान  
रहे हितैषी मानवता का,  
जन-मन का कल्याण करे  
सच्चा सेवक मानवता का  
और सच्चा इंसान बने

## रेलगाडी

लेखक - संतोष कुमार साहू (प्रकृति)



रेलगाड़ी छुक छुक रेलगाड़ी।  
पानी पुरी गुप गुप पानी पुरी॥

गाड़ी के आगे इंजन है बोझ ढुलाना काम है।  
चाहे हिंदू चाहे मुस्लिम सबके लिए समान है।

चाहे गरीब हो चाहे अमीर हो, चढ़ते हैं इसमें खुश खुश ।  
रेलगाड़ी छुक छुक रेलगाड़ी। पानी पुरी , गुप गुप पानी पुरी

पानी पुरी के ही बिना जैसे ओ बेनाम है।  
चाहे गोरा चाहे काला सभी में उसका नाम है।  
चलते फिरते सब खा जाते, पानी के साथ चुप चुप।

रेलगाडी छुक छुक रेलगाडी।  
पानी पुरी गुप गुप पानी पुरी।

डिब्बा कभी लडते नही आपस में भाईचारा है।  
पुरी कभी लडते नहीं बंधन में अंधियारा है।  
हम क्यों रगडे हम क्यों झगडे,मिलकर रहें सब छुप छुप।  
रेलगाडी छुक छुक रेलगाडी।  
पानी पुरी गुप गुप पानी पुरी।

## शिक्षा मेरा अधिकार

लेखक - प्रकाश सेठ



शिक्षा मेरा अधिकार है,  
शिक्षा से ही उद्धार है।  
अपना अधिकार पाने को,  
ज्ञान का दीप जलाने को  
मैं रोज स्कूल आऊँगा  
मैं रोज स्कूल आऊँगा

अज्ञानता अंधकार है,  
इसमें जीना दुश्वार है।  
ये अंधकार मिटाने को,  
सबको राह दिखाने को।  
मैं रोज स्कूल आऊँगा  
मैं रोज स्कूल आऊँगा

मुश्किल कोई भी आए,  
रास्ता कोई भी रोके।  
हर मुश्किल से टकराने को,  
स्वाभिमान जगाने को।  
मैं रोज स्कूल आऊँगा  
मैं रोज स्कूल आऊँगा



## सर्दी बड़ी बेदर्री

लेखक - गोपाल कौशल



पहनकर शीतलहर की वर्दी  
कंपकपाने-तपाने आई सर्दी ।  
क्या बच्चें -बूढ़ें ,क्या जवान  
थर -थर कांप रहें ऐसी सर्दी ॥

दूध संग पीएं खारक हल्दी  
शरीर रहें बच्चों सदा हेल्दी ।  
गरमागरम जलेबी,गराडू भी  
खूब भाते आती हैं जब सर्दी ॥

मम्मी कहें सो जा बेटा जल्दी  
रजाई,कंबल हैं हमारे हमदर्दी ।  
सूरज दादा भी लेट हो जाते  
जब कोहराम मचाती हैं सर्दी ॥

## विज्ञान पहेली

रचनाकार - प्रेमचन्द साव

1. एक काँच की लड़की,  
पारा पीकर रहती।  
गर्मी में वह चढ़ती,  
शीतलता में वह गिरती॥  
है पास्कल की पुत्री  
प्रेमी डॉक्टरों की।  
कहो कौन, जो रखती  
खोज खबर गर्मी की ?
2. वह तेज पुंज, भू उसका  
चक्कर सदा लगाये।  
कहो कौन चंदा को  
चांदी-सा चमकाये ?
3. नित्य नये रूप ले  
रात को सजाता  
कहो कौन माह में  
एक छुट्टी पाता ?

4. दो गैसों से मिलकर बनता  
उनसे भिन्न तरल  
कहो, कौन जो रूप बदलकर  
बन जाता बादल ?

5. एक प्रतापी तेजस्वी के  
हैं आठ बेटे।  
वे सबके-सब उसके तन से  
ही हैं टूटे।  
वे अपने बापू के चारों ओर घूमते।  
अब बोलो हम उनके कुल को  
क्या हैं कहते ?

6. पेड़ पकाते हैं सदा  
उससे अपना खाद्य ।  
देख उसे है टूटता,  
अंधकार का राज्य॥  
किंतु न छू पाया उसे  
अब तक कोई मित्र ।  
ध्वनि से भी जो तेज है,  
ऐसा कौन विचित्र ?

7. पृथ्वी की छाया, पूनम के  
चंदा पर जब पड़ती,  
तब धरती पर और गगन में  
घटना अद्भुत घटती।  
और उस समय मधुर चांदनी  
कहीं कैद हो जाती ।  
बोलो बोलो यह घटना है,  
जग में क्या कहलाती ?
8. सोने-चांदी कि नहीं  
उसे तनिक परवाह ।  
उसके तन मन में बसी,  
बस लोहे की चाह॥  
वह लोहे को खींचती,  
लाती अपने पास।  
बोलो किसके वंश का,  
कुतुबनुमा में वास ?
9. जलते दीपक उसको पाकर  
बुझने-बुझने लगते ।  
किंतु कोयले जलते-जलते  
उसको उगला करते ॥  
हम सब भी निज निश्वासों से  
उसे छोड़ते रहते ।  
किंतु पेड़ उसको अपनाते  
कहो उसे क्या कहते ?

10.अपनी पृथ्वी के भीतर जल  
और खनिज चट्टानें,  
करते रहते हलचल हरदम  
वह जाने अनजाने।  
उनकी हलचल या टक्कर से  
ग्राम नगर मिट जाते ।  
बोलो क्या कहते हैं उसको  
जिससे सब घबराते ?

सही उत्तर:- (1) थर्मामीटर (2)सूर्य (3) चंद्रमा (4) जल(5) सौर मंडल(6) प्रकाश  
(7) चंद्रग्रहण(8) चुंबक(9) कार्बन डाइऑक्साइड (10)भूकंप

## सामान्य ज्ञान - पुराने समय का ताला

संग्रहकर्ता - किरण कटेन्द्र

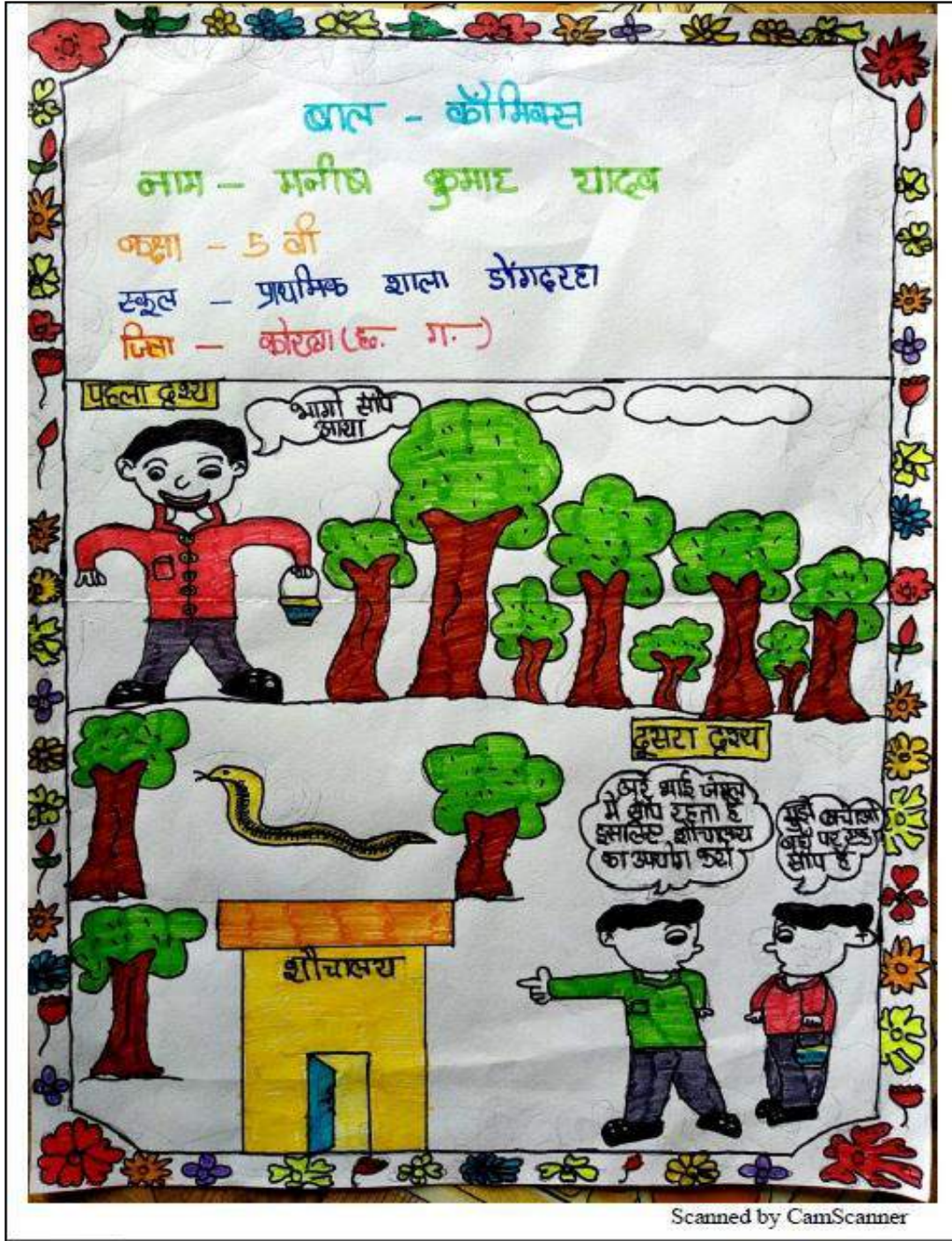


आपने ताले तो बहुत देखें होंगे, परन्तु पुराने समय में ताले कुछ अलग प्रकार से बनते थे. किरण कटेन्द्र जी ने हमें एक पुराने ताले की तस्वीर भेजी है. शायद आपको अच्छी लगे. देखिये इस ताले की चाबी पेंच की तरह है. क्या आप जानते हैं कि पुराने सामान, ताले, सारौते, चाकू आदि का भी एक संग्रहालय पूना में है. इसके बारे में अपने गुरुजी से पूछियेगा.

## बाल कामिक्स

भेजने वाले शिक्षक - अशोक राठिया (प्रा.शा. डोंगदरहा)

मनीष यादव का चित्र





## नेहा यादव का चित्र





## कला- कागज का बैग बनाना

लेखक - एलन साहू



**उद्देश्य** - पर्यावरण के प्रति जागरूकता सहित बच्चों के सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र का विकास.

**सामग्री** - ड्राइंग शीट, मार्कर और कैची, गोंद.

**निर्माण विधि** - चित्र के अनुसार कागज़ को काट कर एवं गोंद से चिपकाकर बैग बनाए जा सकते हैं. उन्हें विभिन्न प्रकार से सजाया संवारा जा सकता है. जब बच्चे कागज का बैग बना लें, तब उन्हें रंग देकर उसमें अपने मन पसंद चित्र बनाने,

उसमें रंग भरने और उसमें अपना नाम लिखने के लिये भी कहा जाये. बच्चे बड़ी रुचि से यह कार्य करते हैं।

**उपयोग** - बच्चों के बीच एक सामान्य पर्यावरण जागरूकता लाने कि की प्लास्टिक की बैग की तुलना में कागज का बैग पर्यावरण हेतु ज्यादा अच्छा है.

**लाभ** - स्वप्रेरित होकर बच्चे बड़ी रुचि के साथ कागज का बैग बनाने हेतु उत्साहित होते हैं. कक्षा में सीखने-सीखने का सकारात्मक वातावरण बनता है.

## नवाचारी गतिविधि - सजीवों की संरचना एवं कार्य

प्रस्तुतकर्ता - आशा उज्जैनी



उद्देश्य - पौधे के विभिन्न भाग एवं कार्य की समझ विकसित करना.

कक्षा - 6 वीं, विषय - विज्ञान

विधि - छात्रों को कक्षा के बाहर मैदान में ले जाकर विभिन्न प्रकार के पौधों को दिखाइये एवं उसके बाद पौधों के भाग को चार्ट पेपर ओर ब्लैकबोर्ड पर प्रदर्शित करिये.

## नवाचारी गतिविधि - सौर मंडल

प्रस्तुतकर्ता - अनामिका पाण्डे



उद्देश्य - सौर मंडल की समझ विकसित करना.

कक्षा - 6 वीं, विषय - विज्ञान

सामग्री - चार्ट पेपर, रंग आदि.

विधि - बच्चों को सौर मंडल के संबंध में बताकर एवं ब्लैक बोर्ड पर समझा कर चार्ट पर सौर मंडल का चित्र बनवाइये और सूर्य तथा सौर मंडल के विभिन्न ग्रहों के बारे में समझाइये.



## विज्ञान के खेल - पौधों में पानी एवं भोजन का संवहन

लेखक - रत्नेश गर्ग



उद्देश्य - शिक्षा को रोचक बनाना एवं गतिविधि आधारित शिक्षण के माध्यम से पौधों में संवहन एवं स्थानांतरण की अवधारणा को समझना.

सामग्री - काँच का गिलास, लाल स्याही, गुड़हल की तीन कोमल टहनियाँ, ब्लेड, स्लाइड, सूक्ष्मदर्शी इत्यादि.

गतिविधि - किसी काँच के गिलास में पानी लेकर लाल स्याही की कुछ बूंदें डालें. गुड़हल की कोमल टहनियों को रंगीन पानी में रखें. एक घंटे बाद तने की पतली

काट काटें. उसे स्लाइड पर रखकर सूक्ष्मदर्शी से देखें. काट में रंगीन भाग कौन सा है? तने से लगी पत्ती की काट का भी अवलोकन करें. दोनों के आधार पे चर्चा करें. तने की व पत्ती की काट का रंगीन भाग ज़ाईलम है? इसका कार्य पानी और खनिज लवण का जड़ों से पत्तियों तक संवहन करना है.

अब गुड़हल की ही दो टहनियों को ले और एक टहनी की छाल को ब्लेड की सहायता से वलय के रूप में काट कर निकाल लें. दूसरी टहनी की छाल को सुरक्षित रखते हुए अंदर ठोस भाग से उत्तको को नष्ट कर दें. अब दोनों को रंगीन पानी में डुबो दे. अब 2-3 घंटों में अवलोकन कर इनके लक्षणों के आधार पर प्रश्न बनाकर चर्चा करें -

1. दोनों पत्तियों की टहनीयों में क्या अंतर दिखाई दे रहा है?
2. एक दिन बाद दोनों टहनीयों में क्या अंतर दिखाई देता है?
3. दिखाई देने वाले अंतर का कारण क्या हो सकता है?
4. जाइलम कहा होता है और उसके क्या कार्य है?
5. फ्लोएम कहा होता है और उसके क्या कार्य होते हैं?
6. संवहन बंडल किसे कहते हैं?

## सामान्य ज्ञान

लेखक - वीरेन्द्र चौधरी

### हमारा शरीर

#### हड्डी

#### 206 हड्डी का विवरण

सिर/खोपड़ी	=	08
चेहरा	=	14
कान	=	$3 \times 2 = 6$
गला	=	01
हाथ	=	$32 \times 2 = 64$
पसली	=	25
रीढ़	=	26
पैर	=	$31 \times 2 = 62$

सबसे बड़ा हड्डी  $\Rightarrow$  फीमर (जांघ)

सबसे छोटा हड्डी  $\Rightarrow$  स्टेपिस (कान)

सबसे मजबूत हड्डी  $\Rightarrow$  जबड़े का हड्डी

सबसे कमजोर हड्डी  $\Rightarrow$  नाक व रीढ़ का हड्डी

बिना जोड़ वाली एकमात्र हड्डी  $\Rightarrow$  हायोइड (गला)

सबसे अधिक टूटने वाली हड्डी  $\Rightarrow$  हाथ का हड्डी

हड्डी में पाये जाने वाले तत्व  $\Rightarrow$  कैल्शियम व  
फास्फोरस

शरीर में हड्डीयो के वजन का  $\% = 14 \%$

हड्डीयो को मजबूत बनाने वाला विटामिन  $\Rightarrow$  D

हड्डीयो के अंदर खोखला स्थान को अस्थि मज्जा कहते हैं।



## चुटकुले

चंकी (टीचर से ) – मैम , अगर आपका आशीर्वाद मिल जाये तो मैं अच्छे नंबर से पास हो जाऊँगा.

टीचर – हाँ हाँ, पर तुमने तैयारी तो ठीक से की है ना ?

चंकी – तैयारी ही ठीक से की होती तो आपके पास आशीर्वाद मांगने क्यों आता.

टीटू – सर , लोग हिंदी या इंग्लिश में ही क्यों बोलते है ? मैथ्स में क्यों नहीं ?

टीचर – ज्यादा 3-5 मत करो , 9-2-11 हो जाओ, नहीं तो 5-7 खींच कर दूंगा तो 6 के 36 नजर आएंगे और 32 के 32 बाहर निकल आएंगे.

टीटू – बस सर....समझ गया, हिंदी इंग्लिश ही ठीक है, मैथ्स की भाषा तो बड़ी खौफनाक है.

टीचर – टीटू बताओ वो कौनसा पक्षी होता है, जिसके पंख तो होते हैं लेकिन वह उड़ नहीं सकता.

टीटू – सर, मरा हुआ पक्षी.

बेटा – माँ दस रुपये चाहिए गरीब को देने हैं.

माँ – कहाँ है गरीब ?

बेटा – बाहर कड़ी धूप में आइसक्रीम बेच रहा है.

टीचर – 15 फलों के नाम बताओ.

छात्र – आम, केला, अमरुद.

टीचर- शाबास, और बताओ.

छात्र – एक दर्जन केले.

## भाखा जनउला - छत्तीसगढी वर्ग पहेली

रचनाकार - दीपक कंवर

	1 कु	2				3 सों	
						4 हा	
5 बो	6	रा		7 क	8 छे		
9	रा						10 गो
			11 गु				
	12 ति					13 डो	
						14 क	
15 अं					16 टु		

बाएं से दाएं - 1.कुला, 4.हड्डी, 5.एक व्यंजन का नाम, 7.कचहरी, 9.ओला,  
11.एक व्यंजन का नाम, 12.त्योहार, 14.चाचा,  
15.पत्ते व कण्डे के बीच बनायी गयी रोटी, 16.लडका

ऊपर से नीचे - 2.मुर्गा, 3.छ.ग. का प्रसिद्ध मिष्ठान्न, 5.बकरा,  
6.उड़द की रोटी, 8.बकरी, 10.पैर, 11.मीठा, 12.राष्ट्रध्वज का रंग, 13.बुड़दा

### उत्तर

	1 कु	2 कु	र			3 सों	
		क				4 हा	ड़ा
5 बो	6 ब	रा		7 क	8 छे	री	
9 क	रा				रि		10 गो
रा			11 गु	जि	या		इ
	12 ति	हा	र			13 डो	
	रं		तु			14 क	का
15 अं	गा	क	र		16 टु	रा	